

मायामूल का उद्धार और मूलशंकर

मूल संस्कृत व हिन्दी



वक्तव्य

परमपिता परमेश्वर की असीम कृपा से यह ग्रंथ आपके पास पहुंचा है। यह उस समय की बात है, जब गोस्वामी तुलसीदास प्रभु के ध्यान में मग्न थे। प्रभु की कृपा से उन्हें मायामूल की कथा स्मरण हुई। प्रभु ने कहा कि कलियुग में होने वाले मूलशंकर के प्रभाव से बचने के लिए इस ग्रंथ की रचना करो। लेकिन भगवान के वरदान के कारण यह ग्रंथ और मायामूल का कलियुग में मूलशंकर नाम से प्रसिद्ध होना और उसे प्राप्त वरदान का पूर्ण होना, इन सबके बाद ही इस ग्रंथ का ज्ञान किसी को हो सकता था। भगवान की कृपा से मैंने इसका अनुवाद किया, ताकि इसे पढ़कर भगवान की कृपा सभी पर हो सके।

पार्थ उवाच:

हे भगवन्! कलियुगे मूलशङ्करनामधेयेन प्रसिद्धो
मायामूलः कथं तव कृपया उद्धृतः? ॥१॥

पार्थ बोले हे भगवान! कलियुग में मूलशंकर नाम से प्रसिद्ध
होने वाला मायामूल का आपने कैसे उद्धार किया? ॥१॥

भगवानुवाच:

हे पार्थ! धूर्तमायामूलोऽयमज्ञानिनां समूहः वेदान् स्वार्थं
विकृत्य जनसमक्षं प्रदर्शयति। ॥२॥

भगवान बोले हे पार्थ! ऐसे धूर्त मायामूल, जो वेदों को
अपने स्वार्थ के लिए तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करते हैं। ॥२॥

मायया लिप्तः चिलमधूम्रपानं कृत्वा धर्मं ज्ञानं ददाति, परान्
धर्मं शिक्षयति। ॥३॥

जो माया से लिपटे हुए, चिलम और हुक्का पीते हैं, फिर भी
धर्म पर ज्ञान बांटने का दिखावा करते हैं। ॥३॥

यः सनातनधर्मस्य मूलं वर्णव्यवस्थां प्रहारति, भोले जनान्
मूर्खत्वेन विमोहयति धर्मिकत्वमिव दर्शयति। ॥४॥

जो सनातन धर्म की मूल वर्ण व्यवस्था पर प्रहार करते हैं
और भोले-भाले लोगों को मूर्ख बनाकर यह दिखाते हैं कि
वे धर्म के साथ हैं। ॥४॥

स्त्रियः पुरुषांश्च लोभेन वशीकृत्य, तेषां बुद्धिसंयोगं कृत्वा
स्वकार्यं साधयति। ॥५॥

जो मनुष्यों के दिमाग से खेलते हैं, महिलाओं को उनके
अधिकारों का प्रलोभन देकर, और पुरुषों को लोभ में
फंसाते हैं। ॥५॥

पुरुषं ब्रह्मणत्वं प्रदास्याम इति वदति, ते लोभेन तद्जाले
पतन्ति। ते न जानन्ति ईश्वरस्य कर्मविधिं च। ॥६॥

जो पुरुषों से कहते हैं, हम तुम्हें ब्राह्मण बना देंगे, और उन्हें
अपने जाल में फंसा लेते हैं। वे नहीं समझते कि ऐसा करना
ईश्वर और कर्म के विधान के विरुद्ध है। ॥६॥

स्त्रियः वेदमन्त्रपठनं कर्मणां च अधिकारं लभ्यते
इत्याकर्ष्य, ताः स्ववशं करोति। ॥७॥

जो महिलाओं को वेद मंत्र पढ़ने और अन्य कार्यों का
अधिकार देकर उन्हें फुसलाते हैं, जबकि वे कार्य ईश्वर ने
उनके लिए नहीं बनाए हैं। ॥७॥

हे पार्थ! एतादृशं मायामूलं धनुषाभिः शरैः भिन्नं कुरु। एषा
एव दुष्टाय न्याय्यशिक्षा। ॥८॥

हे पार्थ! ऐसे मायामूल को अपने बाणों से पूरी तरह भेद
डालो। ऐसे दुष्ट प्राणियों के लिए यही एकमात्र दंड है। ॥८॥

भगवानुवाचः

मायामूलं जीवितं धर्तुं व्रतं कृतवानस्मि। एकं संवत्सरं
शरपीडितो व्यथते, ततः तस्य वधं करिष्यामि। ॥९॥

भगवान बोले:

मैं मायामूल को जीवित रखूंगा। इसका दंड यह है कि वह
पूरे एक वर्ष बाणों से तड़पता रहेगा, और उसके बाद मैं
उसका वध करूंगा। ॥९॥

अथ संवत्सरातीतः सन् भगवान् मायामूलं प्रति गतवान्। तं प्राह -
दुष्ट! तव मोक्षकालः आगतः। वद, किं ते अन्तिमेच्छा? ॥१०॥

एक वर्ष बीत जाने के बाद भगवान् मायामूल के पास आए और बोले, अब तुम्हारे मुक्त होने का समय आ गया है। दुष्ट मायामूल, बताओ, तुम्हारी अंतिम इच्छा क्या है? ॥१०॥

मायामूल उवाचः

प्रथमं वचनं देहि यद् यदहं व्रजेयं तत् सर्वं पूरयिष्यसि। ॥११॥

मायामूल बोला, पहले आप यह वचन दें कि मेरी जो भी अंतिम इच्छा होगी, आप उसे अवश्य पूर्ण करेंगे। ॥११॥

सर्वं दुःखं भोक्त्वापि अहङ्कारोऽस्य न गतः। ॥१२॥

इतनी सजा भोगने के बाद भी मायामूल का अहंकार कम नहीं हुआ था। ॥१२॥

भगवानुवाचः

व्रज, अहं ते अन्तिमेच्छां निश्चयं पूरयिष्यामि। ॥१३॥

मांगो, तुम्हारी अंतिम इच्छा अवश्य पूर्ण होगी। ॥१३॥

मायामूल उवाचः

मम नाम विश्वे प्रसृतं भवतु। गुणगानं सर्वत्र भवेत्। मम अनुयायिनः
बहवः स्युः। महर्षिपदं मे प्राप्येत।॥१४॥

मायामूल बोला, मैं चाहता हूं कि पूरी दुनिया में मेरा नाम हो, मेरा
गुणगान हो, मेरे अनगिनत अनुयायी हों, और मुझे महर्षि जैसा बड़ा
पद मिले।॥१४॥

भगवानुवाचः

हे मायामूल! अद्य तव वधं करिष्यामि। परं मम वचने सत्यं स्यात्। तव
इच्छा केवलं तेषां कृते पूर्णा भविष्यति, ये माये जगत् सत्यं मन्यन्ते,
कलियुगे भ्रमं स्वीकुर्वन्ति।॥१५॥

भगवान बोले:

हे मायामूल, आज तुम्हारा वध होगा। लेकिन मेरे वचन के अनुसार
तुम्हारी यह इच्छा पूर्ण होगी। यह इच्छा उन्हीं पर प्रभावी होगी जो
माया-जगत को सत्य मानते हैं और कलियुग के मायाजाल में फंसे
होंगे।॥१५॥

कलियुगे ५००० वर्षेभ्यः परं, फाल्गुनदशम्यां विक्रमसंवत् १८८१
तदनुसारं १२ फरवरी १८२४ ई. तङ्कारानगर्या मोर्बीराज्ये
अम्बाशङ्करयशोदाबायोः सम्भोगतः तव मूलशङ्करनाम्ना जन्म
भविष्यति। ततः ते इच्छाः पूर्णाः भविष्यन्ति।॥१६॥

कलियुग के 5000 वर्ष बीत जाने पर, फाल्गुन दशमी, विक्रमी संवत् 1881 (12 फरवरी 1824 ई.) को टंकारा, मोरबी रियासत में अंबाशंकर और यशोदा बाई के संभोग से तुम्हारा 'मूलशंकर' नाम से जन्म होगा। इसके बाद तुम्हारी यह इच्छा पूर्ण होगी।॥

१६॥

भगवान् तस्य वधं कृत्वा धर्मस्य पुनः स्थापना कृतवान्। परं मायामूलेन छलं कृत्वा भगवान् वचने बद्धः सन् वरं स्वीकृतवान्।॥१७॥

भगवान ने मायामूल का वध किया और पुनः धर्म की स्थापना की। लेकिन मायामूल ने छलपूर्वक भगवान से वचन लेकर यह वरदान मांग लिया कि वह कलियुग में प्रभावित होगा।॥१७॥

भगवानुवाच:

हे पार्थ! ये मे भक्ताः तेषां उपरि कलियुगस्य प्रभावः न भविष्यति। ये माये जगत् असत्यं मन्यन्ते, तेषां उपरि मायामूलस्य प्रभावः न भविष्यति।॥१८॥

भगवान बोले:

हे पार्थ! मेरे सच्चे भक्तों पर कभी भी कलियुग का प्रभाव नहीं होगा। जो माया-जगत् को असत्य मानते हैं, उन पर मायामूल जैसे अधर्मियों का प्रभाव नहीं पड़ेगा।॥१८॥

इस प्रकार कलियुग में मूलशंकर
और मायामूल का उद्धार।
यह कथा यहीं समाप्त होती है।



॥इति कथां समाप्तिः॥